IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत होने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. देवकी नन्दन शर्मा

सारांश –प्रस्तुत शोध प्रपत्र में सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत होने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का तुलनात्मक अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया कि' **सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं के अन्तर्गत किए जाने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति भरतपुर एवं धौलपुर के विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**' यह अध्ययन भरतपुर एवं धौलपुर जिले के 500 छात्रों पर किया गया। उपकरण के रुप में स्वनिर्मित प्रत्यक्षीकरण मापनी का प्रयोग किया गया तथा निष्कर्ष में पाया गया कि भरतपुर व धौलपुर मे सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं के अन्तर्गत किए जाने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'जिसके कारण शून्य परिकल्पना को **अस्वीकृत** किया गया। इसका कारण दोनो जिलों में अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त शिक्षण के तरीके, पाठ्यक्रम, विद्यालयों की भौतिक व्यवस्थाएँ, शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों का रहन सहन, उपलब्ध संसाधन, योजनाओं के उद्देश्य एवं उनके कियान्वयन में असमानताएं रहीं।

मुख्य शब्दावली – सर्व शिक्षा अभियान, शैक्षिक योजनाएं , कक्षा–कक्ष शिक्षण, विद्यार्थियों का प्रत्यक्षीकरण

प्रस्तावना – लोकतंत्र के सफल संचालन के लिए शिक्षित तथा प्रबुध्द नागरिकों की आवश्यकता है। लोकतन्त्रीय देशों में प्रत्येक व्यक्ति को प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान करना अनिवार्य माना गया है । जब भारत 1947 में स्वतंत्र हुआ तब उसकी जनसंख्या का 85 प्रतिशत भाग निरक्षर था तथा 6–11 वर्ष की आयु वाले केवल 31 प्रतिशत बच्चे विद्यालयों में जा रहे थे । इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने संविधान में यह प्रावधान किया कि राज्य को 14 वर्ष तक के सभी बच्चों की निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रयास करना चाहिये । इसकी पूर्ति सन् 1960 तक हो जानी चाहिये । परन्तु इसमें पर्याप्त साधनों की कमी, जनसंख्या में

भारी वृध्दि ,लड़कियो की शिक्षा में रूकावटें ,गरीबी तथा माता पिता की निरक्षरता तथा शिक्षा के प्रति उदासीनता जैसी बड़ी कठिनाईयों एवं बाधाओं के कारण संविधान निर्देशों की पूर्ति आज तक नहीं हो पाई है। चारों ओर इस निर्देश की पूर्ति की मांग हो रही है। यह मांग सामाजिक न्याय तथा लोकतंत्र दोनों ही दृष्टियों से आवश्यक है। शिक्षा के सार्वजनीकरण के लिये सर्वशिक्षा अभियान भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। सर्वशिक्षा अभियान की योजना का आरम्भ भारत सरकार ने 2001 में किया। जिसके अन्तर्गत देश के सभी जिलों तक इस कार्यक्रम को पहुँचाने तथा 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों के लिए प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य रूप से लागू करने का प्रयास किया गया था।

सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत वर्ष 2010 तक 6 से 14 आयु वर्ग के सभी बच्चों को संतोषजनक, निःशुल्क, जीवनोपयोगी एवं गुणवत्तापरक प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। केन्द्र सरकार द्वारा राज्यों के साथ भागीदारी करके इस कार्यक्रम को सम्पूर्ण देश में क्रियान्वित किया जा रहा है। जिसके लिये केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच साझेदारी को वर्ष 2011–12 से अगले वर्षों के लिये 50:50 किया गया है ।

संबंधित साहित्य अध्ययन – संबंधित साहित्य हेतु शोधकर्ता द्वारा कुछ महत्वपूर्ण स्त्रोतों का अवलोकन किया गया है, जिनमें पुस्तकें ,पत्र–पत्रिकाएं, वार्षिकी, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन ,शोध प्रबंध ,ज्ञानकोष ,बुलेटिन आदि स्त्रोतों से शोध साहित्यों का अध्ययन प्रमुख है।

अध्ययन की आवश्यकता :–

राजस्थान राज्य में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं है। यहाँ के बालक भारत सरकार द्वारा सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत दी जा रही निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का लाभ नहीं ले पा रहे हैं। अतः शोधकर्ता के मन में कुछ प्रश्न उठे।

- सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत कौन–कौन सी शैक्षिक योजनाएं संचालित की जा रही हैं ?
- इन योजनाओं से विद्यार्थियों को लाभ मिल रहा है या नहीं ?
- इन शैक्षिक योजनाओं के प्रति विद्यार्थियों का दृष्टिकोण कैसा है ?

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर जानने की इच्छा से शोधकर्ता ने प्रस्तुत समस्या को शोध का आधार बनाया है।

समस्या कथनः–" सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत होने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन का उद्देश्य :–

सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं के अन्तर्गत किए जाने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति भरतपुर एवं धौलपुर के विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं के अन्तर्गत किए जाने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति भरतपुर एवं धौलपुर के विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन के चर –

स्वतंत्र चर :– सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाएं

आश्रित चर /परतंत्र चर :

1. **कक्षा–कक्ष शिक्षण** 2. **विद्यार्थियों का प्रत्यक्षीकरण**

तकनीकी शब्दों की व्याख्या :–

सर्व शिक्षा अभियान – इससे तात्पर्य भारत सरकार द्वारा वर्ष 2001 से संचालित उस योजना से है जिसमें 6 से 14 वर्ष तक की आयु वर्ग के बालक एवं बालिकाओं हेतु निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान है। यह प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु संचालित एक सर्वाधिक महत्वाकांक्षी और आधारभूत कार्यक्रम है।

शैक्षिक योजनाएं– इससे अभिप्राय सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत प्राथमिक स्तर पर संचालित उन योजनाओं से है जिनका उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण एवं शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि करना है।

कक्षा–कक्ष शिक्षण – इससे अभिप्राय अध्यापकों द्वारा कक्षा कक्ष में प्रयुक्त शिक्षण विधियों एवं तरीकों के माध्यम से किये जाने वाले शिक्षण से है।

विद्यार्थियों का प्रत्यक्षीकरण– इससे अभिप्राय सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं के संरचनात्मक संगठन एवं शैक्षिक प्रक्रियाओं के प्रति बालक एवं बालिकाओं के प्रत्यक्ष अनुभव एवं दृष्टिकोण से है।

परिसीमन– प्रस्तुत शोध कार्य केवल भरतपुर व धौलपुर जिले के प्राथमिक विद्यालयों में सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत संचालित शैक्षिक योजनाओं व उनसे संबंधित विद्यार्थियों तक सीमित है।

अध्ययन विधि एवं उपकरण–प्रस्तुत शोध मे अध्ययन विधि हेतु **वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है। कोई मानकीकृत परीक्षण उपलब्ध नहीं होने के कारण शोधकर्ता ने **विद्यार्थियों हेतु स्वनिर्मित प्रत्यक्षीकरण मापनी** का निर्माण किया ।

न्यादर्श चयन– प्रस्तुत शोध में न्यादर्श की **यादृच्छिक चयन विधि** द्वारा भरतपुर एवं धौलपुर जिले के कुल 500 छात्रों (जिसमें 250 छात्र एवं 250 छात्राओं) को चयनित किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीः– प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन ,टी–परीक्षण, आंकड़ो का रेखाचित्रीय प्रस्तुतीकरण आदि सांख्यिकी विधियों का आंकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रयोग किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या –

परिकल्पना :–

सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं के अन्तर्गत किए जाने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति भरतपुर एवं धौलपुर के विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण की व्याख्या :–

तालिका

सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं के अन्तर्गत किए जाने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति भरतपुर के विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण की धौलपुर के विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण से तुलना :–

घटक	मध्यमान	संख्या	मानक विचलन	टी मान	स्वातंत्र्य संख्या	सार्थकता का स्तर
भरतपुर	27.72	250	6.54	2.148	249	**.05***
धौलपुर	31.34	250	10.45			

*.05 = .05 स्तर पर सार्थक,अन्तर **.01 = -01 स्तर पर सार्थक अन्तर ***NS = सार्थक अन्तर नहीं

व्याख्या :–

तालिका के अनुसार भरतपुर जिले में सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं में किए जाने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति भरतपुर के 250 विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण को मापने के प्राप्तांकों का मध्यमान 27. 72 है और धौलपुर जिले में सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं में किए जाने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति धौलपुर के 250 विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण को मापने के प्राप्तांकों का मध्यमान 31.34 है। भरतपुर व धौलपुर के विद्यार्थियों के सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं में किए जाने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति प्रत्यक्षीकरण के प्राप्तांकों का मानक विचलन क्रमशः 6.54 व 10.45 है। तथ्य गणना में भरतपुर व धौलपुर के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों से टी–मान 2.148 प्राप्त हुआ । यह इस बात को सिद्ध करता है कि दोनों समूहों में सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं में किए जाने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति प्रत्यक्षीकरण के प्राप्तांकों में .05 स्तर पर सार्थक अन्तर है। क्योंकि सार्थक अन्तर स्पष्ट करने के लिये 249 स्वातंत्र्य संख्या के अनुसार टी–मान .05 व .01 स्तर पर क्रमशः 1.980 व 2.617 होना आवश्यक है। प्राप्त टी–मान 2.148 इस आवश्यक मूल्य से अधिक है। इसीलिए यह स्पष्ट है कि भरतपुर व धौलपुर के विद्यार्थियों में सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं में किए जाने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर है।

सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं में किए जाने वाले कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति भरतपुर के विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण की धौलपुर के विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण से तुलना का रेखाचित्र :–

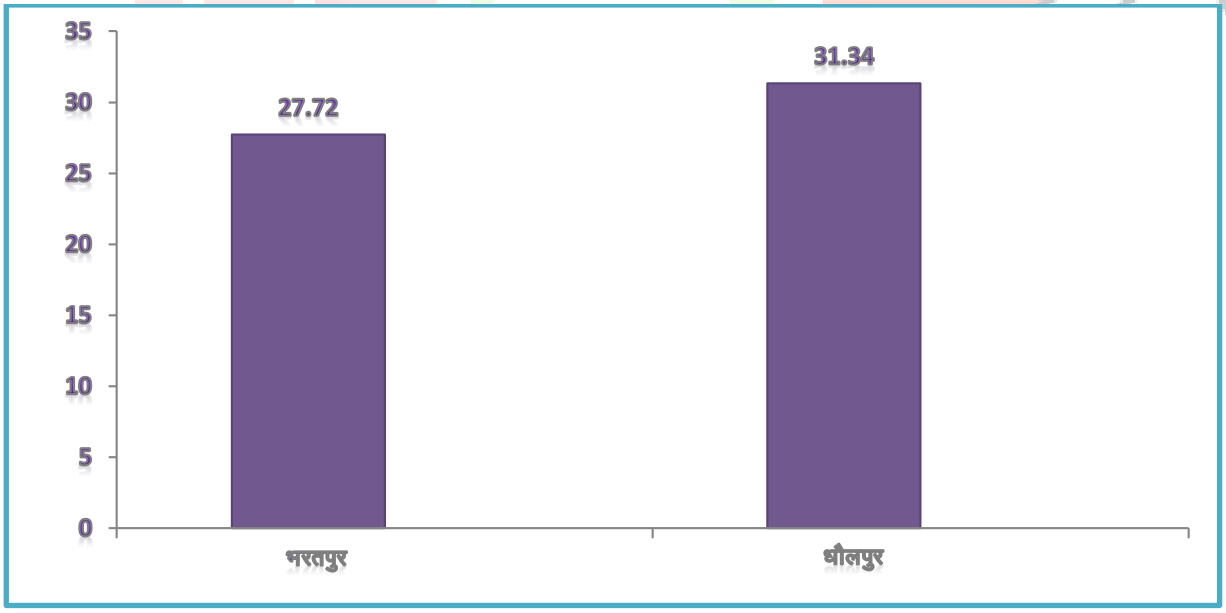

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- **बुच.एम. बी (1991)–**चतुर्थ सर्वे, रिसर्च इन एजुकेशन–1983–1998 वॉल्यूम– I, II, एन.सी.ई.आर.टी.,नई दिल्ली–16
- **गुप्ता, एस.पी. (2001)–** आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद
- **बैस्ट, जॉन डब्ल्यू–** रिसर्च इन एजुकेशन, III एडीशन (1976) , प्रिन्टिस हॉल ऑफ इन्डिया, नई दिल्ली–110001
- **भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर, एम.– (1992)–** मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आर, लाल बुक डिपो, मेरठ
- **कॉल,लोकेश (1998)–** शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
- **वार्षिक रिपोर्ट, डी.पी.ई.पी 2012–2013**– राजस्थान प्राथमिक शिक्षा परिषद जयपुर
- Pratiyogita Darpan, Magzine, February 2001, Year 23, No. 7,Agra.
- Pripreksha, Magzine, April 1996, Year 3, No.1, NIEPA, New Delhi.
- Sharma, R. (1998), Universal Elementry Education: The Question of How Economic and Political Weekly. Vol.33 (26).
- Shekhar, Dr.B.(1997), Rajasthan Mein Shikshanusandhan-Sampraptiyan awan Sambhawnayen-3, Shiksha Vibhag Rajasthan , Bikaner.
- Shivira Patrika, Magzine, May-June 2000, Year 40, No.2, Bikaner
- Shukla S. (1994), Attainment of Primary School children in India, NCERT, New Delhi.